श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ अंतर्गत

समाधितंत्र अध्ययन वर्ष

सौजन्य : मातुश्री ललिताबेन व्रजलाल शाह परिवार, जलगांव

प्रश्नपत्र क्रमांक - ६ (कुल मार्कस–५०)

अभ्यासक्रम : **समाधितंत्र : गाथा ६६ से ७५**

परीक्षार्थीका नाम: ..... उम्र वर्ष : .....

मंडलका नाम : ..... गाँवका नाम : .....

फोन नंबर : ..... ता. २५-१२-२०१९

सूचना : (१) प्रश्नोंके उत्तर समाधितंत्रके आधार पर देने होंगे।

प्रश्न–१ : कौंसमें दिये गये विकल्पमेंसे सही विकल्पसे रिक्तस्थानकी पूर्ति कीजिये। १०

(१) वास्तवमें आत्मा ज्ञानस्वरूप होनेसे ..... ही उसका शरीर है। (पुद्गल, ज्ञान, कर्म)

(२) जो आत्मदर्शी है वे स्वयंका निवासस्थान .....को ही मानते हैं। (वन, ग्राम, शुद्धात्मा)

(३) ज्ञानीको आत्मस्वरूपका भान है, इसलिये उसे शरीरके कोई भी वर्णसे ..... नहीं होता। (राग-द्वेष, कषाय, ममत्वभाव)

(४) आत्माको ही आत्मा मानना वह शरीरके सर्वथा त्यागरूप ..... का बीज है। (मुक्ति, संसार, कर्म निर्जरा)

(५) साधकको जैसे-जैसे भेदविज्ञानका बल बढ़ता जाता है वैसे-वैसे उनको पर पदार्थके प्रति ..... होता है। (आदरभाव, समभाव, उपेक्षाभाव)

प्रश्न–२ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर 'हा' अथवा 'नहीं'में दिजीये। १०

(१) जहाँ मोहभाव सहित उपयोग परपदार्थोंमें अटकता है वहाँ रागरूप दशा वर्तती है। .....

(२) जिनको आत्मस्वरूपका अनुभव हुआ है ऐसे ज्ञानी पुरुषोंको ग्राम या अरण्य ही निवास स्थान है। .....

(३) जैसे लाल वस्त्र और शरीर भिन्न है वैसे लाल वर्णवाला शरीर और आत्मा भिन्न नहीं है। .....

(४) जीव कर्मके उदयमें शामिल न हो तो उसे कर्मबंध नहीं होता, और पूर्वके कर्मका नाश होता है। .....

(५) सविकल्पदशामें उपयोग आत्मस्वरूपमें स्थिर नहीं हो सकता है। .....

प्रश्न–३ : नीचे दिये गये प्रश्नोंके एक ही शब्दमें उत्तर दिजीये। १०

(१) शरीरमें आत्मबुद्धि करनेसे अन्यभवमें भी किसकी प्राप्ति होती है ? .....

(२) आत्मस्वरूपके अभ्यासीओंको कैसे जनोंके संसर्गसे दूर रहेना योग्य है ? .....

(३) जिस समय अंतरात्मा आत्मस्वरूपकी भावना करते-करते स्वरूपमें स्थिर हो जाते है, तब जडक्रियात्मक ऐसा किस ओरका लक्ष छूट जाता है ? .....

(४) जीव जब स्वयंकी विपरीतताको टालता नहीं तब तक कौनसे कर्मका प्रवाह चालु रहता है ? .....

(५) आत्मा और शरीरको एकक्षेत्रावगाह कैसा सम्बन्ध है ? .....

प्रश्न : ४ नीचे दिये गये प्रश्नोंके उत्तर शोर्टमें दिजीये। १०

(१) जिसे शरीरादिरूप जगत काष्ट पाषाणादि तुल्य अचेतन और निःस्पन्द भासता है वह किसको प्राप्त होता है ?

(२) ज्ञानीको पुनर्भव न करना हो तो उसके लिये क्या करना होगा ?

(३) आत्मा ही आत्माका गुरु किसलिये है ?

(४) कैसे आत्माका चित्तमें निरंतर ध्यान करना चाहिये ?

(५) जिनके चित्तमें अविचल धृतिके स्वरूपमें प्रसति हो वह किसको प्राप्त होता है ?

प्रश्न : ५ नीचे दिये गये कोई भी एक विषय पर निबंध लिखें । **१०**

(१) अज्ञानी जीव ''यह शरीर ही मैं हूँ'' ऐसा कौन कारणसे मानता है ? उस सम्बन्धित लिखें ।

(२) अज्ञानी और ज्ञानीके निवास कौन-कौनसे है उसका वर्णन कीजिये ।

(३) योगीको लौकिकजनोंका संग क्यों त्यागना चाहिये उस सम्बन्धित लिखें ।

नोंध : कृपया प्रश्नपत्र–६ के उत्तरपत्र ता. ३१-१-२०२० तक सोनगढ़ पहुँचे इस प्रकारसे भेजे ।